रोज़गार के लिए प्रशिक्षण देने वाला औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान

नुपुर कश्यप

भारतीय अर्थव्यवस्था सार्वभौमिकरण एवं उदारीकरण की प्रक्रिया में है और इस प्रकार उद्योगों एवं सेवा क्षेत्रों जैसे प्रयोक्ताओं की आवश्यकताओं के अनुरूप पर्याप्त कुशलता रखने वाले कुशल कार्मिकों का उपयुक्त संख्या में विकास किए जाने की आवश्यकता है. यह कार्य औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान द्वारा किया जा रहा है, जिसे इसके संक्षिप्त रूप ''आई.टी.आई.'' के नाम से भी जाना जाता है ।

आई.टी.आई. पहले 1969 में भारत में औद्योगिकीकरण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से प्रारंभ हुआ था. भारत में सबसे अधिक रोज़गार शायद अंसगठित क्षेत्रों में है. चूंकि लघु उद्यम रोज़गार सृजन के क्षेत्र में अग्रदूत होते हैं, इसलिए इन क्षेत्रों के लिए कुशलता का विकास करने का निर्णय लिया गया. प्रारंभ में फिटर, मशीनिस्ट, वेल्डर आदि जैसे ही कुछ ऐसे परामपरागत औद्योगिक ट्रेड थे, जिनमें प्रशिक्षण दिया जाता था. किंतु सेवा क्षेत्रों के पनपने के साथ ही बाद में अस्पताल प्रबंधन, रिटेल प्रबंधन आदि जैसे ट्रेडों को प्रशिक्षण के लिए शामिल कर लिया गया. भारत की व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रणाली विभिन्न आई.टी.आई (सरकारी संस्थाओं) और आई.टी.सी. (निजी संस्थाओं के माध्यम से प्रशिक्षण देती है. देश में लगभग 12000 ऐसे संस्थान हैं ।

आई.टी.आई. में प्रवेश लेने के कारण :

1. आई.टी.आई का मुख्य उद्देश्य समाज के कमजोर वर्गों को रोज़गार उपलब्ध कराना है. अधिकांश कुशलता प्रशिक्षण कार्यक्रम इतने मंहगे हैं कि इन्हें वहन नहीं किया जा सकता और लम्बी अवधि के हैं इनके अतिरिक्त ऐसे कार्यक्रमों के लिए उच्च शैक्षिक योग्यताएं अपेक्षित होती हैं. इन शर्तों को आसान बनाने के लिए आई.टी.आई. मूल रूप में इस तरह तैयार किए गए हैं कि वे समाज के ऐसे निचले वर्गों को कौशल प्रदान कर सकें जो मंहगे प्रशिक्षण वहन नहीं कर सकते

2. यह संस्थान उन व्यक्तियों की आवश्यकता को पूरा करते हैं जिन्हें उच्च शिक्षा लेने का अवसर नहीं मिला. इसी कारण से आई.टी.आई. में प्रवेश के लिए न्यूनतम शैक्षिक योग्यता मैट्रिक, हाई स्कूल या इंटरमीडिएट है. यह उन व्यक्तियों के लिए भी एक उपयुक्त विकल्प है जिनका झुकाव तकनीकी शिक्षा की और है या जो छोटी आयु में वेतन अर्जित करना चाहते हैं ।

3. आई.टी.आई. भारत में एक ऐसा व्यावसायिक प्रशिक्षण संस्थान है जिसके एन.सी.वी.टी. प्रमाण पत्र विश्व भर में मान्यताप्राप्त हैं, क्यांकि यह आई.एल.ओ. (अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक संगठन) द्वारा प्रमाणित है. इसलिए इस प्रमाण पत्र के आधार पर मजदूर विश्व में कहीं भी आवेदन कर सकते हैं. भारत में, सरकार उद्योगों के लिए, केवल आई.टी.आई. द्वारा प्रमाणित मजदूरों को ही रोज़गार देने को अनिवार्य बनाने पर विचार कर रही है. इससे एक बहुत बड़ी सीमा तक रोज़गार के अवसरों में वृद्धि होगी ।

4. पी.पी.पी. (सार्वजनिक–निजी सहभागिता), विश्व बैंक और घरेलू निधियन (डोमेस्टिक फंडिंग) जैसी योजनाओं का उद्देश्य संगठनों तथा संस्थानों की आधारिक संरचना एवं स्तर सुधारना है. इसी उद्देश्य को कुछ आई.टी.आई. में भी लागू किया जा रहा है, जहां एक ट्रेड को अत्याधुनिक सुविधाओं के साथ सी.ओ.ई. (उत्कृष्टता का केन्द्र) के रूप में लिया जाता है. छात्रों को संबंधित नवीनतम मशीनरी एवं सोफ्टवेयर की जानकारी दी जाती है जो उन्हें कोटिपूर्ण शिक्षा प्राप्त करने में सहायता करती है. उत्कृष्टता केन्द्र में ट्रेडों का चयन क्षेत्र की स्थानीय आवश्यकता के अनुसार किया जाता है जिससे स्थानीय अथवा निकटवर्ती क्षेत्रों में रोज़गार की संभावनाएं बढ़ती हैं. यह मुख्य रूप से लड़कियों के लिए सहायक होता है, क्योंकि वे किसी कार्य के लिए दूर के स्थानों पर जाने की अनिच्छुक होती हैं ।

5. आई.टी.आई. विभिन्न विधाओं के छात्रों के कैम्पस साक्षात्कार की व्यवस्था करते हैं. कुछ छात्रों को छोड़कर उनमें से अधिकांश छात्रों की कंपनियां चुन लेती हैं ।

6. आई.टी.आई. में विभिन्न ट्रेडों के पाठ्यक्रम विभिन्न उद्योगों की आवश्यकताओं को ध्यान में रख कर तैयार किए जाते हैं. छात्रों को ट्रेडों का सही एवं व्यापक ज्ञान दिया जाता है, जहां वे मशीनें चलाना, मशीनों का रखरखाव करना और उनमें आने वाली खराबियों को ठीक करना सीखते हैं. यहां पर बल सैद्धांतिक अध्ययन के स्थान पर व्यावहारिक प्रशिक्षण पर दिया जाता है इससे छात्रों को ज्ञान आसानी से समझने और लम्बे समय तक अधिक स्पष्ट रूप में आत्मसात करने में सहायता मिलती है ।

7. अध्ययन का समय भी कारखाना नियमों के अनुसार आठ घंटे प्रतिदिन होता है. इस तरह उद्योगों को मजदूरों को प्रशिक्षण देने में अपना समय एवं धन बर्बाद नहीं करना पड़ता, इस कार्य–आधारित नीति का लाभ यह है कि प्रशिक्षण पूरा करने के बाद, छात्र कारखाने के माहौल में आसानी से ढल जाते हैं और वे अधिक सफल या उपयोगी होते हैं ।

8. प्रत्येक बैच में केवल 16 से 21 छात्र होते हैं, और इस प्रकार, छात्रों पर प्रशिक्षण के दौरान पूरा ध्यान दिया जाता है ।

9. छात्रों को अपनी रुचि के आधार कोई ट्रेड चुनने के लिए कहीं ट्रेड उपलब्ध होते हैं. इस समय आई.टी.आई. तकनीकी एवं गैर–तकनीकी क्षेत्रों के लिए लगभग 300 ट्रेड चला रहे हैं और इन ट्रेडों की संख्या समय के साथ निरंतर बढ़ती जा रही है ।

10. एक और कारण आई.टी.आई. को सफल बना रहा है और वह कारण यह है कि इनमें पढ़ाने का माध्यम ऐच्छिक होता है. छात्र अपनी परीक्षा अंग्रेजी या हिंदी में दे सकते हें. चूंकि अंग्रेजी हमारी मातृभाषा नहीं है, इसलिए कई व्यक्ति अंग्रेजी बोलने में कठिनाई का सामना करते हैं. इस प्रकार आई.टी.आई. में छात्रों के विकास में भाषा की बाधा आड़े नहीं आती. यहां छात्रों को कुशल बनाना ही मुख्य उद्देश्य है ।

प्रवेश के नियम एवं शुल्क :

अब तक आई.टी.आई. में प्रवेश दो तरीकों से दिया जाता था. उनमें से एक तरीका ''संयुक्त प्रवेश परीक्षा'' के आधार पर प्रवेश देना और दूसरा मैरिट के माध्यम से प्रवेश देना था. किंतु वर्ष 2011 से सभी प्रवेश केवल प्रवेश परीक्षा के माध्यम से दिए जाएंगे. इस परीक्षा में साधारण गणित एवं विज्ञान के साथ कुछ प्रश्न सामान्य ज्ञान के होंगे. प्रवेश सूचना अप्रैल या मई महीने में राष्ट्रीय समाचार पत्रों में अधिसूचित की जाती है ।

इस समय आई.टी.आई. सामान्य तथा अ.पि.व. के उम्मीदवारों से रु. 40/– प्रति माह का साधारण शुल्क लेता है. अ. जा. एवं अ.ज.जा. के उम्मीदवारों से कोई शुल्क नहीं लिया जाता ।

रोज़गार के प्रकार :

आई.टी.आई. प्रमाणपत्र धारी उम्मीदवारों के लिए विविध प्रकार के व्यापक रोज़गार उपलब्ध होते हैं ।

1. **उद्योगों तथा उद्यमों में श्रमिक :** उद्योगों में कुशल एवं अर्ध–कुशल श्रमिकों की अत्याधिक आवश्यकता होती है. विशेष रूप से बढ़ई, आराकश (सॉअर), अपहोल्स्टर, मशीनिस्ट, फिटर, क्रेन, ऑपरेटर, मैकेनिक, वेल्डर, टर्नर, प्लम्बर, इलेक्ट्रीशियन, टूल एवं डाइ मेकर, मेसन, ड्राफ्ट्समेन, रखरखाव मैकेनिक (डेयरी, वस्त्र मशीनरी आदि), पैटर्नमेकर, मैकेनिक (ट्रैक्टर, अर्थमूवर मशीनरी, मोटर वाहन) आदि के लिए अधिक अवसर होते हैं, जो श्रमिक के रूप में उद्योगों तथा वर्कशॉप में कार्यग्रहण कर सकते हैं. समाचार पत्रों में समय समय पर विभिन्न सरकारी एवं गैर सरकारी रिक्तियां विज्ञापित की जाती हैं. रेलवे, सेना, पुलिस, अर्ध–सैनिक बल एवं अन्य विभाग रोज़गार देने वाले मुख्य विभाग होते हैं ।

सरकारी क्षेत्र में विभिन्न श्रमिकों का वेतन, वेतन–बैंड–1 में होता है भिन्नता केवल ग्रेड वेतन में होती है. सामान्यतः कुशल श्रमिक वेतन बैंड–1 (रु. 5200–20200य ग्रेड वेतन रु. 1900) के अनुसार वेतन प्राप्त करते हैं और अर्ध–कुशल श्रमिकों को रु. 1800 का ग्रेड वेतन दिया जाता है. बटालियन में हेड कॉन्स्टेबल (मोटर मैकेनिक आदि) वेतन बैंड–1 में रु. 2400/– का ग्रेड वेतन प्राप्त करते हैं और कॉन्स्टेबल (ड्राइवर, मैकेनिक आदि) का ग्रेड वेतन रु. 2000/– होता है. निजी उद्योगों में श्रमिक कंपनी के स्तर एवं उनकी नीतियों के अनुसार वेतन प्राप्त करते हैं ।

2. **कार्यालय–कार्य :** विभिन्न एजेंसियों, सरकारी विभागों, अनुसंधान संगठनों आदि में भी आशुलिपिक, कंप्यूटर ऑपरेटर (ट्रेड : आशुलिपिक हिंदी/अंग्रेजी), कंप्यूटर ऑपरेटर एवं प्रोग्रामिंग सहायक, कंपनी सचिव आदि के रूप में रोज़गार

खोजा जा सकता है. इनमें रु. 2400/– तक का ग्रेड वेतन प्राप्त कर सकते हैं. इन रोज़गारों में टाइपिंग, आशुलेखन आदि जैसे सामान्य कार्यालय–कार्य शामिल होते हैं ।

3. अध्यापन : किसी भी संगठन के लिए अनुदेशक महत्वपूर्ण अंग होते हैं. अध्यापकों/प्रशिक्षकों/संकाय अनुदेशकों के बिना स्कूलों, शैक्षिक संस्थाओं की कल्पना करना व्यर्थ होता है. आई.टी.आई. प्रशिक्षण के बुनियादी पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद कोई भी व्यक्ति उच्च प्रशिक्षण पाठ्यक्रम (सी.टी.एस./पी.ओ. टी.) प्राप्त कर सकते हैं, जो सरकारी संस्थाओं में अनुदेशक बनने के लिए एक पूर्वापेक्षा होती है. अनुदेशकों का वेतन बैंड रु. 9300–29000 का और ग्रेड वेतन रु. 4200/– होता है. आज–कल आई.टी.आई. की संख्या बढ़ाने की नीति के अंतर्गत निजी क्षेत्र को निजी आई.टी.आई./आई.टी.सी. (औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र) खोलने के लिए, प्रोत्साहित किया जा रहा है. इससे भी अनुदेशकों के लिए रोज़गार का सृजन हो रहा है. निजी आई.टी.आई. में व्यक्ति कुशलता तथा मांग के अनुसार एक समेकित वेतन प्राप्त करता है और आई.टी.सी. में इनकी नियुक्ति के नियम भी कड़े नहीं होते ।

4. स्व–रोज़गार : यदि कोई व्यक्ति कहीं बाहर कोई कार्य करना नहीं चाहता तो वह स्व–रोज़गार का विकल्प ले सकता है. ''कटाई एवं सिलाई'' ट्रेड के छात्र छोटे स्तर पर दर्जी की दुकान खोल सकते हैं और बड़े स्तर पर अपना निजी उत्पादन ग्रह भी प्रारंभ कर सकते हैं. ''केश एवं त्वचा देखभाल'' ट्रेड के छात्र अपना ब्यूटी पार्लर चला सकते हैं. इलेक्ट्रीशियन, प्लम्बर अपनी निजी रिपेयरिंग वर्कशॉप चला सकते हैं. मोटर मैकेनिक अपने गराज खोल सकते हैं. बढ़ई, फिटर अपनी निजी दुकानें खोल सकते हैं या दिहाड़ी पर कार्य कर सकते हैं. लगभग सभी बैंकों में ऐसे जरूरतमंद व्यक्तियों को कम ब्याज दर पर ऋण देने की कुछ योजनाएं हैं : ऐसे ट्रेडों में से कुछ उपयुक्त ट्रेड निम्नलिखित हैं : बेकर एवं कन्फेक्शनर, फ्रूट एवं वेजीटेबल प्रोसेसर, लेदर क्राफ्ट्स ट्रेड (चमड़े के सामान बनाने वाले, जूते–चप्पल निर्माता), फोटोग्राफर, हैल्थ एवं स्लिमिंग असिस्टेंट, वस्त्र ट्रेडर वीवर, निटर, प्रिंटिंग निटर, हेयर ड्रेसर, ड्रेस डिजाइनिंग, डेस्क टॉप पब्लिशिंग ऑपरेटर आदि स्वरोज़गार में कोई भी व्यक्ति अपने कौशल के आधार पर हजारों रु. कमा सकता है. ।

ये ट्रेड एवं इनसे जुड़े व्यक्ति समय के साथ अत्यधिक महत्व और उपयुक्त सम्मान प्राप्त कर रहे हैं. यहां तक कि बाहरी देश भी कुशल जन–शक्ति की अपनी आवश्यकता को पूरा करने के लिए भारत की ओर देखता है ।

लेखिका राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (डब्ल्यू.), रायबरेली (उ.प्र.) की प्रिंसिपल है.,